अशोक के 'धम्म' की विशेषताएँ

Features of Ashoka's Dhamma :)

अशोक की धम्म की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

(i) सार्वभौमिकता :- अशोक का धम्म (धर्म) सार्वभौम था। उसके धर्म में सभी धर्मों के श्रेष्ठ सिद्धान्तों का समन्वय था। उसने न तो साम्प्रदायिकता और संकीर्णता को, न धर्मान्धता और धार्मिक कट्टरता।

(ii) मूल धार्मिक तत्वों पर बल :- अशोक ने मूल धार्मिक तत्वों पर अधिक बल दिया था। धार्मिक बाह्य आडम्बरों एवं अनुष्ठानों को महत्व-हीन बतलाया गया। अशोक ने धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों तथा बाह्य क्रिया विधियों को निरर्थक बतलाया गया।

(iii) श्रेष्ठ पवित्र नैतिकता :- अशोक के धर्म में श्रेष्ठ नैतिकता एवं पवित्र आचरण पर बल दिया गया था। मानव जीवन के नैतिक आचरण से धर्म को जोड़ दिया गया था। धर्म की सफलता के लिए शुद्ध नैतिक आचरण को अनिवार्य माना गया।

(iv) अन्य धर्मों के लिए स्थान :— कोई भी व्यक्ति अशोक के धर्म को अंगीकार करके अन्य धर्म का भी पालन कर सकता था। धर्मावलम्बी अपना-अपना धार्मिक विश्वास रखते हुए अशोक के धर्म को मान सकते थे। अशोक का धर्म सभी धर्मावलम्बियों में सद्भावना उत्पन्न करने के लिए था।

(v) अहिंसा की उच्चता :- सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा का सिद्धान्त प्रतिपादित करके अशोक के धर्म में अहिंसा को ऊँचा स्थान दिया गया था।

Scanned with CamScanner

(vi) धार्मिक उदारता और सहिष्णुता :—

अशोक के धर्म में धार्मिक कटुता और संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं था। धर्म में उदारता और सहिष्णुता की प्रमुखता थी। वह अन्य धर्मों के प्रति आदर और श्रद्धा रखता था।

(vii) लोक कल्याण :— अशोक के धर्म-प्रचार के प्रति लोक कल्याण की भावना थी। धर्म को व्यावहारिक रूप देने के लिए अशोक ने जन-कल्याण और परोपकारिता के अनेकानेक कार्य किये।

(viii) आडम्बरहीनता :— अशोक के धर्म में बाह्य आडम्बरों, अनुष्ठानों और विडम्बनाओं को स्थान नहीं दिया।